Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

भारतीय दार्शनिकों के आत्मतत्त्व को वैज्ञानिक समर्थन और स्वीकार

डो. भारतसिंह एस. डामोर

(संस्कृत विभागाध्यक्ष) एस.के.यु.बी समिति (डभोई) आर्ट्स एवं श्रीमती एन.सी झवेरी कोमर्स कोलेज

पीपलीया, ता. वाघोडिया, जि - वड़ोदरा (गुजरात) सम्पर्क सूत्र -7802027596

bsdamor72@gmail.com

सारांश :- सृष्टि के प्रारंभ से आजतक आत्मतत्त्व दार्शनिकों के लिये ज्ञान-विज्ञान तथा गवेषणा का प्रमुख विषय रहा है | आत्मतत्त्व या चेतना के स्वरूप को जानने की जिज्ञासा दार्शनिकों को हि नहीं अपितु वैज्ञानिकों को भी है | ज्ञान शताब्दी के इस प्रारंभिक दौर मैं आत्मविषयक परिचर्चाओं ने कुछ ज्यादा ही जोर पकड़ा है | इसलिये प्रस्तुत शोधलेख में मैंने भारतीय दार्शनिकों के अध्यात्मज्ञान और साम्प्रतकालीन विज्ञान का समन्वय करके अध्यात्म का वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से विवेचन करने का उपक्रम रखा है | चेतना का वास्तविक स्वरूप को प्राचीन ऋषिओंने आत्मसाक्षात्कार करके अपने दर्शनशास्त्रों में आलेखित किया हैं | ज्यादातर चिंतको का मानना है कि हमारा भाषासामर्थ्य, विचारशक्ति, सामाजिक व्यवस्था आदि मस्तिष्क के स्थूलस्वरूप एवं बनावट पर निर्भर करती है | कई लोगों का मानना है कि मस्तिष्क की कार्यप्रणालि न्यूटन के यांत्रिक सिध्धान्तों पर आधारित है, तथा वह मात्र पर्सनल कम्पूटर की भाति काम करता है | हमारी स्मरणशक्ति, प्रसन्नता, दर्द की अनुभूति ऐच्छिक एवं स्वसंचालित क्रियायें सामान्य मानवीय सामर्थ्य में आती है | इस अनुभूतियों के लिये मानव मस्तिष्क पशुओं के मस्तिष्क के समान कार्य करता है, किन्तु इन्सानों में तर्कशक्ति, कल्पनाशक्ति, समजशक्ति, संवेदनाशक्ति, सौन्दर्यात्मक द्रष्टि, भावनात्मक आकलनशक्ति, अगोचर तत्त्व की अनुभूति आदि शक्तियाँ केवल मनुष्य प्राणी में ही पाई जाती हैं | आत्मानुभूति, सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति और संहार कला आदि अनेकों उच्चस्तरीय अनुभव यह दर्शाते है कि मानवीय चेतना का स्त्रोत जितना स्थूल कलेवर में है, उससे बढ़कर कुछ सूक्ष्म और इन्द्रिय अगोचर भी है | अनुभवों का यह वैचित्र्य कैवल बुद्धि के दायर में बंधा नहीं है, मन, बुद्धि तथा अहंकार से पर, परमचेतना (आत्म) शक्ति को मानने के लिये वैज्ञानिकों का समुदाय आज विवश हुआ हैं | मशीन या कम्पूटर जैसे यांत्रिक साधनों में चेतना का अभाव है | आधुनिक मशीनें चेतना द्वारा अनुभूत कुछ अनुभवों पर आधारित क्रियाओं की कुछ हद तक नक़ल कर सकती है, किन्तु उनके पास स्वयं अनुभवों को प्राप्त करना कल्पनाती है | हमारे प्राचीन तत्त्ववेता दार्शनिकों ने पहले से ही खोज रखा है कि पिंड और ब्रह्माण्ड को चलानेवाली चेतना एक ही हैं | वैज्ञानिकों ने भी मेहसूस किया है कि एक निराकार, चेतन, सर्वव्यापक, बुद्धिमान सत्ता है, जो सर्व वस्तुओं एवं जीवसृष्टि को यथार्थरूप में संपूर्ण तथा साक्षीभाव से निरीक्षण करते है और अन्तर्यामीरूप से सबको अच्छी तरह से जानते हैं | ऋषिओं के प्रतिभासंपन ज्ञानको वैज्ञानिकों ने प्रयोग के माध्यम से विज्ञान का परम आश्रय (आधार) दिया है | यह बाबत शोधपत्र के माध्यम से मैंने मानवसमाज समक्ष प्रस्तुत करने का उपक्रम रखा है |

शब्दकूंची :- उपनिषदों मे वर्णित तथा दार्शनिकों की आत्म संबंधी मीमांसा वेदांग, निघंटु, अमरकोष आदि शब्दकोष के अनुसार कोशगत अर्थ सम्मित हैं | चार्वाक दर्शन से लेकर उत्तरमीमांसादी षड्दर्शनों एवं चिंतकोंने आत्मा को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है | संतमहात्माओं एवं चिंतको, पुराणकर्ताओं, साहित्यकारोंने भी आत्मसंबंधी विचारणा की हैं | वैज्ञानिकों ने भी आत्मा को मन, बुद्धि और अहंकार से पर, परमसत्ता या चेतनाशक्ति के रूपमें स्वीकार किया हैं |

प्रस्तावना :- जीव, जगत् और जगदीश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानना तथा आत्मसात् करना ही जीवन का परम पुरुषार्थ है ऐसा स्पष्ट मत भारतीय दार्शनिकों का है | जगत् के जड या अचेतन पदार्थों का ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो जाता है | पञ्चमहाभूतों से निर्मित भौतिक या स्थूल शरीर तो प्रत्यक्ष है, किन्तु भौतिक शरीर की संचालक अगोचर शक्ति को हम जानते नहीं है | भारतीय दार्शनिक उस अगोचर चेतन तत्त्व को ही आत्मा कहते है | शंकराचार्य के मतानुसार :-

यदाप्नोति यदादत्ते यच्चात्ति विषयानिह ।

यच्चास्य सन्ततो भावस्तस्मादात्मेति कीर्त्यते || (कठोपनिषद् २:१:१: शांकरभाष्य)

अर्थात् आत्मा जगत् के समस्त पदार्थों में व्याप्त होकर रहता है | समस्त वस्तुओं को अपने स्वरूपमें समाते है | स्थिति काल में वे स्वयं विषयों का उपभोग करता है | आत्मसत्ता नित्य रहती है, इसलिये आत्मा का आत्मत्व है | उपनिषदों में आत्मा को नित्य, शाश्वत एवं अजन्मा कहा है | शरीर को रथ और आत्मा को रथस्वामी कहा है |

'आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु |' (कठोपनिषद्)

मांडूक्योपनिषद में शुद्ध आत्मा को तुरीय बताया है | आत्मा की जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्थायें बताई है | तुरीय अवस्था ये तीनों से भिन्न है | ॐकार आत्मा का द्योतक अक्षर है | भगवान श्रीकृष्ण का कथन है कि आत्मा अजन्मा, अमृत, नित्य, सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता |

'न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूय: |

अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ||' (गीता २-२०)

आत्मतत्त्व विषयक चार्वाकमत भौतिकवादी है, वे धन, पुत्र, शरीर, इन्द्रिय, प्राण और मन को आत्मा मानते है | जैनदर्शन के मतानुसार आत्मा न तो अणुपरिणाम है और न तो महत् परिणाम है | आत्मा परिणामी है | जीव केवल देहधारी है, वह छोटा बड़ा होता रहता है | बौद्ध दर्शन आत्मा को नामरूपात्मक मानते है | न्यायदर्शन के मतानुसार आत्मा सर्वव्यापी एवं नित्य है | वैशेषिक दर्शन के आद्यप्रणेता कणाद का मानना है कि आत्मा नित्य है | वे मानते है कि मन को प्रेरित करनेवाला आत्मा ही है, जैसे बच्चा गेंद को इधर उधर फेंकता है ठीक उसी तरह आत्मा मनको अपनी इच्छानुसार भगाता है | सांख्यदर्शनकार कपिल के मतानुसार पुरुष अथवा चेतनतत्त्व ही आत्मा है | संसार का अनुभव करनेवाले जीव को ही सांख्यदर्शन पुरुष कहते है | पुरुष चेतन, निर्गुण, विवेकी, अप्रसवधर्मी, अविकारी और नित्य है | योगदर्शन के मतानुसार ईश्वर नित्य, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी परमात्मा है | संसार के समस्त जीवों से परमात्मा भिन्न एवं श्रेष्ठ है | जीव विविध प्रकार के दु:खों और कर्मफलों का भोक्ता है | पतंजलि के मतानुसार पुरुष के तिन प्रकार है बद्ध पुरुष, मुक्त पुरुष और प्रकृतिलीन पुरुष | ईश्वर इन सभी पुरुषों से भिन्न है | कुमारिल भट्ट आदि मीमांसकों का मानना है कि आत्मा कर्ता और भोक्ता है | ज्ञान, सुख, दु:ख और ईच्छा आदि सारे गुण उसमें समवाय सम्बन्ध में रहते है | प्रभाकर तथा उसके अनुयायि मीमांसकों का मानना है कि आत्मा नित्य, ज्ञाता और अविनाशी है | आत्मा शुद्ध ज्ञान स्वरूप है | वेदान्तदर्शन भारतीय तत्त्वज्ञान का मुकुटमणि है, वेदांतीओं के मतानुसार ब्रह्म सत्य है, जीव और ब्रह्म एक है, जगत माया है | आत्मा वही परमात्मा है | केवलाद्वैत के मतानुसार आत्मा सर्वव्यापक, निरवयव और अधिकारी है | परब्रह्म की तरह आत्मा भी सत्, चित् और आनन्दस्वरूप है | आत्मा स्वयं प्रकाशित है | इस तरह भारतीय दार्शनिकों, संतमहात्माओं तथा विद्वानों ने आत्मसंबंधी गहन तथा सूक्ष्म विचारणा की है |

आत्मा या चेतना के स्वरूप को जानने की जिज्ञासा केवल भारतीय दार्शनिकों को ही नहीं वैज्ञानिकों ने भी की है | वैज्ञानिकों का मानना है कि आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि पशुओं तथा इन्सानों में समान है, किन्तु इन्सानों में उसके अलावा कल्पनाशक्ति, तर्कशक्ति, विवेक, समझशक्ति, सौन्दर्यमय द्रष्टि, सूक्ष्म भावनाएँ, आध्यात्मिकता आदि शक्तियाँ केवल मनुष्यों को ही मीली हैं | आत्मानुभूति, शारीरिक नश्वरता का ज्ञान आदि अनेंकों उच्चस्तरीय अनुभव यह दर्शाते है कि मानवीय चेतना का जितना स्थूल कलेवर में है, उससे बढ़कर कुछ अगोचर और भी है | जिनका समर्थन हमें ईशावास्योपनिषद के इस मंत्र में मिलता है –

'ईशावास्यिमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।' (ईशावास्योपनिषद १-१)

नोबल लारेट, जॉन एक्लस और दार्शनिक कार्ल पोवर का मानना है कि चेतना का स्त्रोत मस्तिष्क के अन्दर सूक्ष्मरूप में है | प्लेटो, देकार्ते एवं ईसाई गिरिजाधरों से जुड़ा दर्शन इस बात पर जोर नहीं देता की आत्मा की ही भाँति बुद्धि का भी कोई विशेष आयाम है | उनके मतानुसार अति सूक्ष्म तत्त्व अवश्य है एवं उसका कोई स्थूल आधार नहीं है | कई विचारों का यह भी मानना है कि चेतना को सही ढंग से न समझे जाने के

कारण ही प्रकृति और संस्कृति के सम्बन्धों को नकारा जा रहा है, जो आज ज्यादातर पर्यावरण संकटों का महत्वपूर्ण कारण है | सामाजिक विग्रह का भी यह एक कारण है | कुछ लोगों का मानना है कि चेतनामात्र भ्रम है, अथवा यह सिर्फ आन्तरिक मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करनेवाला एक निमित्त कारण है, जो मानवीय विकासक्रम में शारीरिक आवश्यक्ताओं की पूर्ति हेतु उत्तरदायी है | इसतरह इन सभी मान्यताओं के अनुसार चेतना ऐसे गुणों का समुच्चय है, जो मात्र यांत्रिक ढाँचे से उत्पन्न हुई है | उनका स्पष्ट कथन है कि चेतनामात्र बौद्धिक कार्यकुशलता तक सीमित है | इसी वजह से बौद्धिक चेतनामात्र एक कम्प्यूटर प्रोग्राम है इस बात का जॉनशर्ले जैसे दार्शनिकों द्वारा तीव्र विरोध किया गया | इन विचारकों के अनुसार बौद्धिक चेतना को यन्त्र माननेवाली विचारधारा ने एक ऐसे समाज का निर्माण किया है, जिसमें कठोर तथा निश्चित नियमों के अंतर्गत कार्य करने का प्रोत्साहन मिला एवं वौद्धिक चेतना की वास्तविक क्षमताओं का उपयोग बहुत ही काम हुआ |

दाना जोहर अपने ग्रन्थ 'द क्वांटम सोसाइटी' में लिखती है कि चेतना का सम्पूर्णक्षेत्र यथार्थ भी है और अति महत्वपूर्ण भी है | मनुष्य अपनी ईच्छानुसार कार्य कर सकता है | स्वयं द्वारा सम्पन्न कार्यों की जिम्मेदारी का उसे एहसास होता है | एसी स्वेच्छा, स्वतन्त्रता, जिम्मेदारी का एहसास यान्त्रिक नियमों पर आधारित मस्तिक में मिलना सम्भव नहीं है | समग्रता चेतना का एक विशेष गुण है | ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न-भिन्न जानकारी उपलब्ध होती है | चेतना उन सबको समग्रता एवं एक्यता देकर अर्थपूर्ण स्वरूप प्रदान करती है | भगवान श्रीकृष्ण भी गीता में कहते है कि

'ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते |' (गीता १०-१०)

अर्थात् निरन्तर मेरे ध्यान आदि में लगे हुए और प्रेमपूर्वक भजनेवाले भक्तों को मैं वह तत्त्वज्ञानरूप योग देता हूँ, जिससे वे मुझको ही प्राप्त होते है | देकार्त के अनुसार शरीर और समग्र चेतना बीच बहुत अन्तर है – शरीर विभाजित है, जबकि चेतना सर्वथा अविभाजित है | चेतना की यही विशेषता वैज्ञानिकों के लिये शोध का विषय है | यह माना गया है कि हमारे समस्त मानसिक क्रिया कलाप - न्यूरान्स (मस्तिष्क की कोशिकाएँ) में विभिन्न संदेशों की आवजाही से होती है | वैज्ञानिकों के लिये यह आजतक आश्चर्य का विषय है कि अनेक अलग न्यूरान्स में विभक्त कोई व्यवस्था किस प्रकार एक्यता देकर हमें अपने अस्तित्त्व की समग्र अनुभूति करा देती हैं | यहाँ निश्चितरूप से उस शक्ति की ओर ध्यान जाता है जो कि इस व्यवस्था की प्रेरक एवं नियंता है | गीता में श्रीकृष्ण ने स्पष्ट बताया है कि –

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् |
बुद्धि बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् || **(श्रीमद् भगवद् गीता ७-१०)**

अर्थात् 'हे अर्जुन तू सम्पूर्ण भूतों (प्राणीओं) का सनातन बीज मुझ को ही जान | मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ |'

डेविड बोम तथा केलीफोर्निया के न्यूरोसर्जन कार्ल प्रिब्राम के मतानुसार मस्तिष्कीय छवियों की एकात्मता तथा होलोग्राम की एक्यता में बहुत समानता है | होलोग्राम को कई हिस्सों में बाँटने पर भी प्रत्येक हिस्से में संपूर्ण छवि सूक्ष्मरूप में मिलेगी, इसी प्रकार मानवशरीर की प्रत्येक कोशिका में सम्पूर्ण शरीर का आनुवंशिक गुण (जैनेटिक कोड) होता है | इस आधार पर लघु में विभु तथा विभु में लघु होने की बात स्पष्ट हो जाती है | इन्हीं प्रयोगों के आधार पर वैज्ञानिक 'अयमात्मा ब्रह्म |' के सूत्र की सार्थकता स्वीकार करने लगे हैं | अब अन्हें स्पष्ट होने लगा है कि किस प्रकार परमात्म चेतना की व्यापक अनन्तता व्यक्ति की आत्मचेतना में समग्ररूप में प्रतिबिम्बित होती है | गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि -

'अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थित : |
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ||' (गीता १०-२०)

अर्थात् 'हे अर्जुन, मैं सब भूतों के ह्रदय में स्थित सबका आत्मा हूँ तथा संपूर्ण भूतों का आदि, मध्य और अन्त भी में ही हूँ | वैज्ञानिकों के मतानुसार होलोग्राम की यह विशेषता लेसर किरणों के कारण है | इंग्लैन्ड की

लीवरपूल यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर हर्बर्ट फ्रोलिक के मतानुसार कुछ ऐसे ही गुण ईस्ट बैक्टीरिया तथा डी.एन.ए. अणुओं में मिलते हैं | जर्मनी के भौतिकशास्त्री फ्रिट्ज पॉपने खोज की है कि जैव ऊतकों से उचित शक्ति द्वारा उत्तेजित किए जाने पर एक धीमे प्रकाश का स्फुरण होता है | प्रत्येक कोशिका की दिवारें असंख्य प्रोटीन तथा वसा के अणुओं से निर्मित होती है | प्रत्येक अणु में एक विद्युत चार्ज होने की सम्भावना है | विश्राम की अवस्था में वे उत्तेजित रहते है, किन्तु भोजन के पाचन से प्राप्त शक्ति से व्यवस्थित होकर दोलित या कम्पित होने लगते हैं | तब प्रत्येक अणु रेडियों ट्रांसमीटर की तरह एक सूक्ष्म सन्देश प्रसारित करता है | इस तरह एक निश्चित उर्जा प्राप्ति के पश्चात् सभी अणुओं द्वारा प्रस्फुटित उर्जा में लेसर किरणों की तरह ऐक्यता (होलिज्म) के गुण होते है |

कार्ल प्रिब्राम के अनुसार मस्तिष्क एक ऐसा ब्लैकबोर्ड है, जिस पर हमारे अनुभव लिखे जा सकते हैं | यह एक तलाब की तरह है, जिसमें चेतना की अंग, विचार, छवियाँ, भावनाएँ, स्मृतियाँ आदि लहरों की तरह उमड़ती रहती हैं | ध्यानावस्था में अन्त:करण पवित्र होने पर मस्तिष्क में कोई लहर या उत्तेजना नहीं होती | इन लहरों के उत्त्पन्न होने की वजह वे विद्युत रासायनिक प्रक्रियाएँ हैं, जो न्यूरान्स में होती रहती हैं | बाह्य जगत से प्रेरित ये प्रक्रियाएँ मनुष्य के आनुवंशिक गुणों, अनुभवों, भावनाओं, रुचियों, स्मृतियों तथा अन्य शारीरिक आवश्यकताओं का मूल कारण है | इन्हीं सबको मिलाकर हमारा मस्तिष्क हमें स्वयं का तथा ब्रह्माण्ड का ज्ञान कराता है | विख्यात न्यूरोलाजिस्ट हैरी वाल्टर अपने ग्रंथ 'ब्रेन एण्ड इट्स रिलेशन विथ कांशियसनेस' में लिखते है कि - मस्तिष्क में तीन प्रकार की प्रक्रियाएँ चलती हैं | श्रृंखलाबद्ध, सामानान्तर और क्वांटम निश्चित सिद्धांतों के आधार पर भाषा समझना श्रृंखलाबद्ध प्रक्रिया द्वारा होता है | समान्तर प्रक्रिया से जटिल आदतें बनती है | कुछ पहचानना या सीखना इसीसे होता है | यह प्रक्रिया छोटे जानवरों में भी मिल जाती है | किन्तु क्वांटम प्रक्रिया के द्वारा सृजनात्मकता आती है | कला, नैतिकता, परस्पर सम्बन्धों आदि के विषय में ज्ञान होता है | इसे ही मानवीय चेतना की विशिष्टता कहा जा सकता है |

वैज्ञानिकों के मतानुसार मस्तिष्क के किसी हिस्से की क्षति से उन गुणों का ह्रास होता है जो उस हिस्से से सम्बन्ध रखते हैं | ऑप्टिक कारटेक्स की क्षति से अंधापन, मोटर कारटेक्स की क्षति से लकवा, ब्रोंकाज एरिया की क्षति से गूँगापन आदि हो जाता है, किन्तु मस्तिष्क पर गंभीर चोटें आने पर भी बहुधा व्यक्ति पूर्ण तथा चैतन्य रहता है | यह छोटे जानवरों तथा शिशुओं में भी देखा गया है | जहाँ अति अल्प या अविकसित मस्तिष्कीय क्रिया कलाप होते हैं | सामान्य क्रम में किसी दूरभाष तंत्र के श्रृंखलाबद्ध तारों को एक स्थान से भी क्षतिग्रस्त कर दिया जाय, तो सम्पूर्ण व्यवस्था निष्क्रिय हो जाती है, किन्तु मस्तिष्क में किसी एक स्थान की क्षति होने पर भी चैतन्यता बनी रहती है | अत: मस्तिष्क में न्यूरान्स के तंत्र द्वारा ही संदेशों का आवागमन होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता | यदि सन्देश सम्पूर्ण मस्तिष्क के विशाल क्षेत्र में समानरूप से फैले हों, तभी ऐसा सम्भव हो सकता है | सामान्यतया निद्रावस्था के दौरान मस्तिष्क का अधिकांश भाग क्षतिग्रस्त होने पर मस्तिष्क को तीव्र झटका लगने पर या बेहोशी की अवस्था में चैतन्यता नहीं रहती | सीजो फ्रेनिया नामक रोंग में मस्तिष्क की चिकनी सतह प्रभावित होने से न्यूरान्स के चारों और बनी क्वांटम फील्ड की ऐक्यता 'कोहेरेन्स' प्रभावित होती है | इसलिये अनुभूतियों की ऐक्यता पर प्रभाव पड़ता है | लेकिन इससे रोगियों की विचारशक्ति में कोई कमी नहीं होती, परन्तु उनका चेतना जगत विभक्त होता है | इसी प्रकार का विभाजन स्वप्नों के दौरान होता है | स्वप्न में हम व्यक्ति के अलग-अलग अंगों को मिलाकर सम्पूर्ण नाटक देख लेते हैं | ऐसा इसलिये संभव है क्योंकि चेतना की ऐक्यता प्रदान करने की शक्ति मन्द पड़ जाती है | इस बात का समर्थन माण्डूक्योपनिषद में मिलता हैं | माण्डुक्य उपनिषद् शुद्ध आत्मा को तुरीय कहते है | जागृति, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीनों आत्मा की अवस्थाएँ हैं | जागृति में आत्मा बाह्य वस्तु का अनुभव करता है | स्वप्नावस्था में आन्तरिक मस्तिष्क का अनुभव करता हैं और निद्रावस्था में आनन्द का अनुभव करता है | इस अवस्थाओं में आत्मा को क्रमशः विश्व, तैजस और प्राज्ञ कहते है |

निष्कर्ष :-

उपनिषदों, श्रीमद् भगवद्गीता तथा दार्शनिक ग्रंथों में आत्मा को सर्वव्यापक, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, नित्य, शाश्वत, अज तथा देही ऐसे कई भिन्न-भिन्न नामों तथा विशेषणों से जाना जाता हैं | भारतीय तथा विश्व के

कई जानेमाने दार्शनिकों ने मानवजीवन का परम पुरुषार्थ आत्म साक्षात्कार या आत्मज्ञान को बताया हैं | दार्शनिकों के आत्मतत्त्व को जानने या समझाने के लिये वैज्ञानिकों ने भी कठिन पुरुषार्थ किया है | अपने विभिन्न प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों के विश्लेषण से कार्ल प्रिब्राम एवं उनके सहयोगी वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुँचे है कि शरीर से उन्नतस्तर की इन्द्रियों का चेतनात्मक स्तर है | इससे उन्नत स्तर मन-मस्तिष्क का है | इससे उन्नत स्तर बौद्धिक चेतना तत्त्व का है और बौद्धिक चेतना से परे आत्माचेतना है, जो इन सभी का मूल स्त्रोत्र है | श्रीमद् भगवद्गीता भी यह बताती है कि –

ईन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्य: परं मन: |
मनस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धे: परस्तु स: || (गीता ३-४२)

अर्थात् इन्द्रियों को स्थूल शरीर से पर यानी श्रेष्ठ-बलवान और सूक्ष्म कहते हैं, इन इन्द्रियों से पर मन है, मन से भी पर बुद्धि है और जो बुद्धि से अत्यन्त पर है वह आत्मा है | यही है आत्मतत्त्व जिसका स्वरूप भले ही विज्ञान और वैज्ञानिक अब तक ठीक तरह से समझ पाए हों, पर उसे स्पष्ट तौर पर स्वीकार करने तो लगे ही हैं | वैज्ञानिक शिरोमणि न्युटन ने ठीक लिखा है कि – “These things being rightly despatched does it not appear from phenomena that there is supreme being incorporal living, inteligent, Omnipresent, who is infinite space sees the things themselves intimately and throughly, preceives them and comprehends them wholly by thir immediate presence to himself”

(Opticks by SirNewton-p 344)

न्यूटनजी के कथन का तात्पर्य यह है कि इस विषयों को अच्छी तरह से समझने के बाद यह मेहसूस होता है कि ‘एक निराकार, चेतन, बुद्धिमान, सर्वव्यापक सत्ता है, जो सर्व वस्तुओं को यथार्थरूप में संपूर्णतया साक्षीभाव से निरीक्षण करते है और अन्तयार्मी रूप से सबको अच्छी तरह से जानते है |’

संदर्भग्रंथ सूचि :

(१)इशावास्योपनिषद्: प.पू शास्त्रीजी पाण्डुरंग वैजनाथ आठवले के प्रवचनों पर आधारित, सद्विचार दर्शन ट्रस्ट मुंबई डिसेम्बर – २००१

(२)कठोपनिषद्: प्रा. वर्षा दवे और प्रा. उर्वी दवे , सरस्वती प्रकाशन अहमदाबाद, प्रथम गुजराती संस्करण १९८९

(३)श्रीमद् भगवद्गीता: गीता प्रेस गोरखपुर, संस्कृत – हिन्दी उनहत्तरवाँ पुनर्मुद्रण, संवत – २०७०

(४)सर्वदर्शन संग्रह मध्वाचार्यकृत:पं. उदयनारायणसिंह तथा गोविन्द सूरि खेमराज, श्रीकृष्ण दास प्रकाशन, मुंबई १९९७

(५)पू भारतीय धर्म और दर्शन:आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा ओरियन्टालिद, वाराणसी, प्रथम हिन्दी संस्करण १९७७

(६)वैदिक ईश्वरवाद और आधुनिक विज्ञान : स्वामी धर्मानंद सरस्वती, अनुवादक परेश ज. कटारिया, प्रथम गुजराती संस्करण २००६

(७)संस्कृत निबंध कौमुदी:संपादक डॉ. जे. ऐस. पटेल तथा अन्य संपादक, सरस्वती पुस्तक भंडार अहमदाबाद, प्रथम गुजराती संस्करण १९९०-९१

(८)अखण्ड ज्योति मासिक: डॉ. प्रणव पंड्या, प्रकाशक मृत्युंजय शर्मा, अखण्ड ज्योति संस्थान मथूरा, जून१९९७.